श्री कामेश्वर सिंह (सहायक प्रोफेसर)
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम
वर्ग – बी॰ए॰ पार्ट – III ; यूनिट नं० – 03
प्रमुख राजनीतिक चिंतक – "डा॰ राम मनोहर लोहिया"

CLASSMATE

दिनांक — 28-05-2020

प्रश्न :- कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त का वर्णन करें।

उत्तर :- अर्थशास्त्र के छठे अधिकरण के दूसरे अध्याय में कौटिल्य मंडल सिद्धान्त का वर्णन करता है। इस मंडल सिद्धान्त का वर्णन कौटिल्य ने 'नीति' और 'स्मृति' ग्रंथों के सिद्धान्तों पर ही किया है। मंडल-सिद्धान्त राम-राज्य के समय से प्रचलित दिग्विजय-सिद्धान्त का ही परिवर्तित रूप है। मंडल का अर्थ है- "राज्यों का वृत" (circle of the kingdom) मंडल-सिद्धान्त भारत के अनेक राज्यों की दृष्टि में रखते हुए रखा गया है। यह सिद्धान्त एक राजा की विजय की आकांक्षा रखनेवाला समझकर रचा दिक अन्य राज्यों की मंडल की रचना करती है। वे निम्नलिखित हैं —
विजिगीषु, अरि, मित्र, अरिमित्र, मित्र-मित्र, अरि मित्र-मित्र पार्ष्णिग्राह, आक्रंद, पार्ष्णिग्राहसार, आक्रंदसार, मध्यम, उदासीन।

1) विजिगीषु :- इस सिद्धान्त में मण्डल केन्द्र ऐसा राजा होता है जो पड़ोसी राज्यों को जीतकर अपने में मिलाने का प्रयास करता है। कौटिल्य ने ऐसे राजा को 'विजिगीषु' राजा (विजय की इच्छा रखनेवाला राजा) कहा है।

2) अरि :- कौटिल्य की मान्यता है कि एक राजा का पड़ोसी राज्य स्वाभाविक रूप से उसका शत्रु राज्य होता है। विजिगीषु राजा के राज्य की सीमा से लगा हुआ जो राज्य होगा वह अरि (शत्रु) राज्य होता है। फ्रांस और जर्मनी, पोलैण्ड और रूस तथा चीन और जापान के द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व के संबंध इस दृष्टि से आँका जा सकता है।

3) मित्र :- अरि के सामने का राज्य मित्र कहलाता है, क्योंकि विजिगीषु को उससे मैत्रीपूर्ण संबंध होता है। अफगानिस्तान के साथ भारत की मित्रता को इस दृष्टि से आज भी देखा जा सकता है।

4) अरिमित्र :- मित्र के सामनेवाला राज्य अरिमित्र कहलाता है। क्योंकि वह अरि का मित्र और विजिगीषु का शत्रु होता है।

(5) मित्र-मित्र :— अरिमित्र के सामने वाला राज्य, मित्र-मित्र कहलाता है, क्योंकि वह मित्र राज्य का मित्र होता है और स्वाभाविक विजिगीषु के साथ भी उसकी मित्रता होती है।

(6) अरिमित्र-मित्र :— मित्र-मित्र के सामने वाला राज्य अरि मित्र-मित्र कहलाता है, क्योंकि वह अरिमित्र राज्य का मित्र होता है और स्वाभाविक अरि राज्य के साथ भी उसका संबंध मैत्रीपूर्ण होता है।

(7) पार्ष्णिग्राह :— विजिगीषु के पीछे जो राज्य रहता है, वह पार्ष्णिग्राह कहलाता है। अरि की तरह वह भी विजिगीषु का शत्रु ही होता है।

(8) आक्रंद :— पार्ष्णिग्राह के पीछे जो राज्य रहता है उसे आक्रंद कहा जाता है। वह विजिगीषु का मित्र होता है।

(9) पार्ष्णिग्राहसार :— आक्रंद के पीछे वाले राज्य को पार्ष्णिग्राहसार कहा जाता है, क्योंकि वह पार्ष्णिग्राह का मित्र होता है।

(10) आक्रंदसार :— पार्ष्णिग्राह के पीछे अवस्थित राज्य आक्रंदसार कहलाता है। वह आक्रंद का मित्र होता है।

(11) मध्यम :— मध्यम ऐसा राज्य है जिसका प्रदेश विजिगीषु तथा अरि राज्य दोनों की सीमा से लगा हुआ है। मध्यम राज्य दोनों की, चाहे वे परस्पर मित्र हों या शत्रु हों, सहायता करने में समर्थ होता है और आवश्यकता होने पर दोनों का अलग-अलग मुकाबला भी कर सकता है।

(12) उदासीन :— उदासीन राजा का प्रदेश विजिगीषु, अरि तथा मध्यम इन तीनों की सीमाओं से परे होता है। वह बहुत प्रबल होता है। उपर्युक्त तीनों के परस्पर मिले होने की दशा में वह उनकी सहायता कर सकता है, उनके परस्पर न मिले होने की दशा में वह प्रत्येक का मुकाबला कर सकता है। इस प्रकार 12 राज्यों का यह समूह राज्य मण्डल कहलाता है। इसे ऐसा समझा जा सकता है —

मध्यम	उदासीन									
आक्रन्दसार	पार्ष्णिग्राहसार	आक्रन्द	पार्ष्णिग्राह	विजिगीषु	अरि	मित्र	[illegible]	अरिमित्र	मित्र-मित्र	अरिमित्र-मित्र

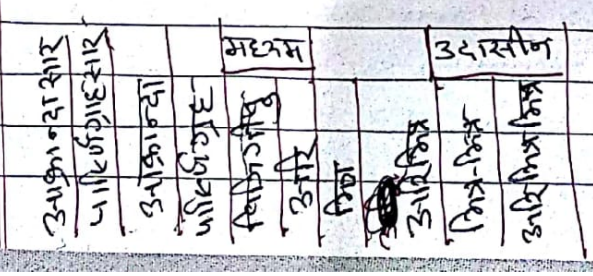

इस प्रकार मण्डल सिद्धान्त के आधार पर कौटिल्य ने इस बात का निर्देश किया है कि एक विजय राज्य के कौन मित्र हो सकते हैं और कौन शत्रु।

The End.